सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, जुलाई-अगस्त, 2013

सिद्धता की ओर आगे बढ़िये

"हे भाइयो, मेरी धारणा यह नही कि मैं प्राप्त कर चुका हूं, परन्तु यह एक काम करता हूं कि जो बातें पीछे रह गई हैं, उन्हे भूल कर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ जाता हूं।" (फिलिप्पियों 3:13)

संत पौलुस एक सकारात्मक विचारक थे। यीशु ख्रीष्ट में पक्का विश्वास, हमें हमेशा आगे देखना सिखाता है। संत पौलुस में पराजय वादी मानसिकता नहीं थी। वे कहते है, 'ख्रीष्ट यीशु के द्वारा मैं सभी कुछ कर सकता हूँ जो मुझे सामर्थ्य देता है।' फिलिप्पियों (4:13) एक दिन हमें अवश्य ही इस महान चेतना को प्राप्त करना है। हमारे होंठों की प्रार्थना, दिल

सिद्धता की ओर... पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

APB News

चैनल पर

*हर **शनिवार सुबह 6:30** से **7:00** बजे*

परमेश्वर यहोवा - गुलामी से विमोचनकर्ता

'मैं यहोवा, तम्हारा पवित्र इस्राएल का सृजनहार, तुम्हारा राजा हूँ। जो समुद्र में मार्ग और प्रचण्ड धारा में पथ बनाता है – यह यहोवा यों कहता है।' (यशायाह 43:15,16)

प्रभु, अपना वर्णन इस तरह करते हैं। इस्राएल की प्रजा के विमोचक बनने के लिए, उन्होंने समुद्र में एक सीधा मार्ग बनाया था। उन्होंने यह दिखाया कि फ़िरौन अब इस्राएल का राजा नहीं रहा। जब फ़िरौन उनका राजा था, तब उनको एक भारी बोझ उठाना पड़ता था। कठोर परिश्रम कराने वाले बेगारी उनके ऊपर नियुक्त थे। इस्राएली प्रजा उस से छुटकारा पाना चाहती थी।

शैतान को यह जानकारी है कि वह हमें कहाँ पर अत्यधिक पीड़ा पहुँचाकर, हमें सता सकता है। साधारतः वह थोड़ी पीड़ा नहीं पहुँचाता, जिसको हम आसानी से सह पाएँ। वह उस जगह कष्ट औऱ दबाव डालता है जहाँ हमें बहुत अधिक पीड़ा होती औऱ इस तरह भारी कष्ट और नुकसान पहुँचाता है।

छुड़ाने वाला मुक्तिदाता कौन है, जो उन सारी जगहों से आपको रिहा करने वाला हो। कुछ ऐसे विचार है जो अत्यंत प्रबल है। ओह, आप उनको अपने मन से निकालते हैं, मगर वे फिर आ जाते है। वे आपका पीछा करते रहते हैं। और आपका पीछा करते हैं। और मानो हठ से आपके पीछे लगने में अड़े रहते है। आप उनसे भाग नहीं पाओगे। आप महासागर भी पार चुकें होंगे मगर वह विचार अब भी आपके पीछे लगे हैं। शैतान कई लोगों को मन में कुछ गलत विचारों से सताता है। लोग कमजोर बन जाते है। और अब उनमें शान्ति नहीं रहेगी। यह तो परमेश्वर का कार्य नहीं हो सकता। परमेश्वर के विचार तो हमे शक्ति देनेवाले, उन्नति देने वाले और छुडाने वाले हैं। अपनी आत्मा की भ्रष्टता के कारण कई दफा हम अपने और परमेश्वर के विचारों में अन्तर नहीं जान पाते। इसलिए बाइबल कहता है, 'ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है।' (नीतिवचन 14:12) आप कहते हो, 'मेरी योजना सही है!'

'मेरा मार्ग सही है!' नहीं! नहीं! परमेश्वर के पास कैसे जाये आपको जानना होगा। यह जानने के लिए उनके पास जाना होगा कि कही यह एक भ्रष्ट आत्मा तो नहीं। या फिर क्या यह परमेश्वर का आत्मा है? आपके हृदय को जाँचने वाले और आपकी आत्मा को तोलने वाले परमेश्वर के पास, आपको जाना होगा। यह भ्रष्ट आत्मा भी एक अत्यंत शक्तिशाली आत्मा भी हो सकती है। वह आपके पूरी परिवार पर बुरा असर डाल सकती है। माता पिता, बेटे-बेटियों पर बुरा असर रहेगा। उस कारण, क्या सही है और क्या गलत है – यह देखना भी असंभाव्य बना सकती है। जहाँ कहीं भी मूर्तिपूजा मौजूद है वहाँ यह भ्रष्टता की आत्मा प्रबलता से रहना हम देख सकते है। अगर मसीही जन भी किसी चीज की मूर्ति बना लें तो वहाँ भी यह भ्रष्टता की आत्मा मौजूद रहेगी। यह आत्मा मैं बड़ी जल्दी पहचान लेता हूँ।

परमेश्वर का वचन कहता है, 'यहोवा, उन्हें उनकी सारी विपत्तियों से छुड़ाता है।' मगर चालीस साल बाद भी उनमें शिकायत करने का स्वाभाव अब भी बना रहा। हर रोज किसी न किसी चमत्कार का अनुभव करते हुए चालीस साल का लम्बा समय बीताने के बाद भी इस्राएलियों में अविश्वास की आत्मा प्रबल थी।

मगर प्रभु उनके लिए एक मार्ग तैयार करने की कोशिश में थे। शुरूआत से ही, उन्होंने जंगल में उनके लिए एक मार्ग बनाया। जब वे मिस्र देश छोड़कर बाहर आये तो उनके सामने समुद्र था। जब आपके सामने एक जंगल हो तो आप किसी से पूछ सकते हो, 'क्या इसे पार करने का कोई रास्ता है?' मगर जब आप एक महा सागर के सामने खड़े हो, आप ऐसा प्रश्न कभी नहीं पूछोगे! मगर परमेश्वर कहते है, 'मैं परमेश्वर हूँ – जो प्रचण्ड धारा में पथ बनाता हूँ।' जब आपके सामने प्रचण्ड धारा हो, तो आप भयभीत हो जाते हो। मैं नहीं मानता कि ऐसा कोई व्यक्ति होगा, जिसके अपने मसीही जीवन में कभी न कभी इस प्रचण्ड धारा का सामना, ना हुआ हो।

मैं उनकी तरफ देखता हूँ – वह एक मात्र हैं जो उस पथ को बनाने में समर्थ है। आप में से कई लोगों के व्यक्तिगत जीवन में पवित्र बने रहने की इच्छा है। मगर किसी न किसी तरह इस विषय में आप विफल रहें हो। और आप किसी तरह असफल महसूस कर रहे हो। कुछ बुरे विचार अब भी आपके मन में है। गुस्सा, कडुवाहट, दुष्ट और लालची इच्छायें और तनिक-सी वासना अब भी आपके दिल में किसी कोने में मौजूद है। अथाह जल आपके सामने है। मगर परमेश्वर आपसे क्या कह रहें है? 'मैं यहोवा हूँ जो प्रचण्ड धारा में पथ बनाता हूँ।' अपनी स्थिति को लेकर शायद आप चिन्तित हो। नहीं, विजय का एक साफ पथ है, जो इस अथाह जल को बांटेगा।

- जोशुआ दानियल

सिद्धता की ओर.. पृष्ठ 1 से

की प्रार्थना बननी चाहिए। इन दोनों को एक होना पड़ेगा। जब ये दोनो एक हो जाएंगी तो परमेश्वर से प्रार्थना के उत्तर पाने पर हमें कोई शक नहीं होगा। ऐसा जन विश्वास में परिपक्व जन हो जाता है।

हमें सावधान होना चाहिए कि जन चीज़ों को हमने पीछे छोड़ दिया है और लोगों को खुश करने के लिये कोई झूठ या लापरवाही से न बोलें। यह - अवनति - एक

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

पीछे हटने वाला कदम होगा।

एक बार जब हमने नम्र होकर अपने पापों को स्वीकार किया और वे क्षमा किये गये, तो दुबारा हमें उनके बारे में सोचकर निरूत्साह होने की आवश्यकता नहीं है। अब ये बातें आगे बढ़ कर जीत हांसिल करने में हमें बाधा न पहुँचाए। जो सो मीटर की दौड़ दौड़ता है वह पीछे मुड़कर नहीं देखता। यदि वह पीछे मुड़कर देखेगा तो जीत नहीं पाएगा।शैतान चाहता है कि हम पीछे मुड़ कर देखें। जब कोई हमारे साथ बुराई करता है, हमें इसके बारे में सोचना नहीं चाहिए। जितनी जल्दी हो सके हमें क्षमा करना और भूल जाना चाहिए। बुराई कभी भी कामयाब नहीं हो सकती है। हम अक्सर सोचते है कि यह हो सकता है और अपने को इससे बचने के लिये बचाव करते है या प्रहार करते हैं। बुराई एक पराजित शक्ति है।

एक मसीही जन के जीवन की सोच में बुराई के लिए कोई जगह नहीं है। हमें बुराई को कभी भी अपनाना नहीं चाहिए। यीशु ने कहा, 'परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना वरन जो तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।' (मत्ती 5:39) बुराई को एक प्रतिरोध करने वाली शक्ति की तरह न पहचानें। बुराई एक शक्ति नहीं है।

युसूफ और दानियेल के जीवन में नकारात्मक विचार नहीं थे। उन्होंने महान जीत का जीवन जीया क्योंकि उन्होंने बुराई का प्रतिरोध नहीं किया। युसुफ के प्रति जो बुराई की गई इसके लिये वह नहीं कुड़कुड़ाया। दानियेल ने भी जो उसके प्रति बुराई की गई थी उसके लिये वह कुड़कुड़ाया नही। यहाँ तक की उसने अपने आप को बचाने की भी परवाह नहीं की, बल्कि उसने परमेश्वर को मौका दिया कि वे अपने आप को सिद्ध करें और कि वह सही है। धन्य है वह व्यक्ति जो क्षमा करता है। आपको क्षमा करके आगे बढ़ जाना चाहिये।

एक व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन पर विश्वास करता है उसे विश्वास करना होगा कि परमेश्वर उसका हमेशा ध्यान करते हैं। बुराई का प्रतिरोध न करें। उसे एक शक्ति न माने। जब आप उसका प्रतिरोध करते हैं तभी वह बल प्राप्त करता है। संत पौलुस को जो अपमान और घाव मिले थे उन पर उसने ध्यान नहीं दिया। यदि उन बुराईयों को जो हमारे प्रति की गई हैं उसके लिये कुड़कुड़ायें तो बुराई हमारे जीवन में बढ़ेगी। उनका स्मरण हमारे जीवन में खुले घाव की तरह होगा और वह आत्मिक जीवन में नीचे गिराएगा।

जब हम क्षमा करना सीखते हैं, हममें नयी कृपा, नयी शक्ति औऱ एक नये विश्वास का विकास होता है। 'और जब कभी तुम खड़े होकर प्रार्थना करो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध है तो क्षमा करो, जिससे की तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है तुम्हारे अपराध क्षमा करें।' (मरकुस 11:25) जब आप प्रार्थना करने के लिये घुटने टेकते हैं, सर्व प्रथम अपने शत्रुओं के लिये प्रार्थना करें। केवल यही एक मार्ग है, नहीं तो आप इतने नीचे गिरते जायेंगे कि शैतान पूरी रीति से आप को अपने नियंत्रण में कर लेगा। उस प्रेमी परमेश्वर के विषय में सोचें जो आप को उपर उठाना चाहते हैं। वे कभी सोते नहीं हैं। मसीह ने बुराई को पराजित किया है। बुराई को एक शक्ति न माने। प्रेम, विश्वास, पवित्रता और शुद्धता – ये अनन्त तक रहती हैं। घृणा, क्रोध और ईर्ष्या नष्ट हो जायेंगे। जो इनको अपने जीवन में आने देते हैं, उनका अपना नाश हो जाता है। वे आपके व्यक्तित्व को नाश करते हैं। आप को नकारात्मक विचारों के विरुद्ध एक बड़ी लड़ाई लड़नी होगी। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने आपके लिये महान चीजों को रखा है। आप को तुच्छ वस्तुओं के बारे में नहीं सोचना है। जब परमेश्वर ने आप के लिये महल रखा है, तो आप उन लोगों से क्यों क्रोधित हैं जिन्होंने आपको अपनी झोपड़ी में जगह देने से इन्कार किया है – उन्हें क्षमा करें जिन्होंने आप के साथ नकारात्मक व्यवहार किया है। परमेश्वर के विषय में सोचें जिनके पास आपके लिये अद्भुत आशिष और अद्भुत स्थान है।

'पर में तुमसे कहता हूँ, कि तुम बुराई का प्रतिरोध न करो – अतः तुम सिद्ध बनो जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।' (मत्ती 5:39,48) ये हमारे परमेश्वर के कथन हैं जिन्होंने युद्ध को हमारे लिए जीता है। जब

हम स्वर्गीय पिता की तरह सिद्ध बनने की कोशिश करते हमारे चारों ओर की प्रकृति भी हमारा सहयोग करती है। जबकि एक सामर्थी परमेश्वर ने हमें सब चीजों को देने के लिए तैयार है तो अपने दुश्मनों के बारे मे ज्यादा ध्यान न दें। मैं ने लोगों की नीचे गिरते देखा है उनके आत्मिक जीवन में नीचे, नीचे और इतने नीचे कि दुष्ट बन गए, कैसे - सिर्फ उन बुराईयों के बारे में सोचकर जो उनके प्रति की गयी थी। पीछे मुडकर न देखें। आप को महसूस करना चाहिए, 'मैं, यीशु मसीह के द्वारा, जो मुझे सामर्थ देते हैं, सभी काम कर सकता हूँ।'

- एन दानिय्येल।

सत्य की परख!

देखो, वह (यीशु) बादलों के साथ आने वाला है, हर एक आंख उसे देखेगी, वरन वे भी देखेंगे जिन्होंने उसे बेधा था, और पृथ्वी के समस्ते कुल उसके कारण विलाप करेंगे। हाँ, आमीन। (प्रकाशितवाक्य 1:7)

जो तुम रख न सको, उसे दे दो

'जो कभी ना खोये, ऐसी चीज पाने के लिए, जो रख नहीं पाये उसे दे देने वाला कोई मूर्ख नहीं है।' सन 1949 में, एक कॉलेज के नौजवान छात्र ने ऐसा लिखा था। उसका नाम जिम इलयट था। कुछ सात साल बाद, सुसमाचार प्रचार करने के एक अभियान के दौरान, जिम ने इस दुनिया में अपना जीवन खोया – 'जो वह रख नहीं पाता' ताकि वह स्वर्ग में एक निवास पाये – 'जो वह कभी नहीं खोयेगा।'

यीशु के लिए हृदय:

छः साल की आयु में एक शाम एक मसीही सभा से लौटते समय जिम ने अपनी माता से कहा, 'माँ, अब, प्रभु यीशु जब चाहे आ सकते है। वह हमारे सारे परिवार को ले जा पायेंगे। क्योंकि अब मैं उद्धार पा चुका हुँ, और जेनी तो,' अपनी छोटी बहन की और संकेत करते कहा, 'वह तो उनको जानने के लिए अभी बहुत छोटी है।' सन 1927, पोर्टलाण्ड ओरिगॉन के एक मसीही परिवार में जन्मा, जिम ने अल्प आयु में ही यह निर्णय किया कि वह मसीह के पीछे चलेगा। उसने, बगीचे में झूले पर से नन्हें मित्रों को सुसमाचार सुनाकर प्रचार करना शुरु किया था।

आयु में बढ़ते जिम ने अपनी दैनिक जीवन में यीशु की महिमा करने का प्रयास करता था। एक बार जब वह स्कूल के काफ़ीघर में भोजन कर रहा था। उस समय, छः फुट तीन इंच - कदवाला, विद्यार्थी दल का अध्यक्ष, जिम के पास आया। वह निकट आ रही छात्रों के नाच-गाने के कार्यक्रम के टिकट बेच रहा था। वह उत्सुक था कि जिम जो एक प्रभावशाली छात्र था – एक टिकट खरीद ले। उस अध्यक्ष ने अपनी बात पर जोर देकर अंत में कहा, 'जिम, तुम भी तो, मेरे जैसा इस विद्यार्थी दल के सदस्य हो, तुम्हें उसका प्रोत्साहन करना चाहिए।' जिम का उत्तर साहसी और सीधा था: 'हाँ', जिम ने कहा, 'मैं विद्यार्थी दल में हूँ। मगर तुम्हारी तरह नहीं'। मैं एक मसीही हूँ। और बाइबल कहता है कि मैं इस संसार **"में"** हूँ, मगर इस संसार **"का"** नही हूँ। इसलिए मैं उस नाच-गाने में भाग नहीं लूंगा।

हाइस्कूल के बाद, जिम ने इल्लिनॉइस में पढ़ाई की जहाँ उन्होंने पूरे मन से प्रभु के पीछे चलने की प्रयास किया। सन 1947, फरवरी में घर चिट्टी लिखते समय, इसका विवरण दिया कि उन्होंने कैसे अपनी सह छात्रावासियों से मिलकर अपनी, 'गुफा' में पार्थना करना प्रारंभ किया है। 'ऐसे समय थे।' 'स्वयं महीमा के प्रथम फल', उन्होंने लिखा, 'और फिर जब भी किसी जरूरत की बात आती, जो परमेश्वर, पूरा कर सकते है, हम

तुरन्त घुटने टेककर उसके बारे में उनसे कहते। वह ऐसे समय थे जब, जब कॉलेज की याद आती – तत्वज्ञान, यादाश्त के पिछले दरवाज़े से बाहर निकल गया। मगर परमेश्वर अब भी अपने सिंहासन पर विराजमान, और हम – अब भी उनके पैरों की चौंकी पर और दोनों के बीच सिर्फ एक घुटने की दूरी!' डिग्री की बात आने पर, जिम जिसे हासिल करने के प्रयास में था, वह थी "A.U.G." – "Approved Unto God", - 'परमेश्वर की इच्छा के अनुसार।'

सेवकाई के लिए तैयार मन:

कॉलेज के पहले दो सालों में, सम्पूर्ण जगत में जाकर सुसमाचार प्रचार करने के, यीशु के आदेश का व्यक्तिगत असर का, जिम को आभास हुआ। निम्नलिखित जैसे आंकडे उन्होंने नोट किये था: 'विदेशों में हर 50,000 लोगों के लिए सिर्फ एक मसीही सेवक उपलब्ध है जबकि संयुक्त राष्ट्र में हर 500 लोगों के लिए एक है।' 'यीशु की आज्ञा और ऐसी तथ्य आंकडों ने मिलकर जिम पर बहुत प्रभाव डाला। अगर वह संयुक्त राष्ट्र में ही बसे रहे तो, उनको यह साबित करना होगा कि उनका ऐसा निर्णय उचित है। सन 1952 में, यीशु का सुसमाचार फैलाने में मदद करने के लिए जिम इक्वाडॉर देश (दक्षिणी अमरीका में स्थित) के लिए रवाना हो गया।

जब तक परमेश्वर की इच्छा ना हो, तब तक अविवाहित रहने की उनकी उत्सुकता और सालों की वार्तालाप के बाद, अंततः जिम ने अपने छब्बीस वें जन्म दिन पर एलीसाबेत होवॅर्ड से क्यूटो में शादी की। 'आदम के आदर्श का पालन करने के लिए, कोई भी, नौजवानों को चेतावनी नहीं देते!' एक दफा उन्होंने अपने माता-पिता को लिखा था, 'आदम ने तब तक इन्तजार किया जब तक परमेश्वर को आदम के लिए जीवन साथी की जरूरत ना दिखी। तब परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में सुलाया, उसके लिए जीवन साथी को तैयार किया और उसे उनके पास लेकर आये। परमेश्वर की इच्छा की 'गहरी नींद सोये रहने' की हम नौजवानो को बड़ी आवश्यकता है। तब अपने समय के अनुसार, परमेश्वर जो ले आते है हम पा सकते है, अगर वो देना चाहे तो। इसके बदले, हम साथी की तलाश में, शिकारी कुत्तों की तरह उनके पीछे पड़े है।

अंतत जिम और एलीसाबेत ने, पूर्वी वर्षा प्रचुर-जंगलों के क्षेत्र के शांडिया को अपना घर बनाया। वहाँ से, वे मसीह के लिए जंगली मूलनिवासियों तक पहुँचना चाहते थे। कई सभाओं के अतिरिक्त, बप्तिस्मा लिये हुए विश्वासियों का एक छोटा सा दल, बांस के बने छात्र-कक्ष में खास मिलने लगे। बिन पीठ के टेक के बेंच और मेजों पर बैठकर वे 'रोटी तोडकर', मसीह के टूटे शरीर और क्रूस पर जो लहू बहाया, उसकी याद में वे रोटी और दाखरस लेने में सहभागी होते। आराधना का सही अर्थ उनको समझ आने लगा – सरल, सच्चाई से अपने हृदय का प्यार, प्रभु को समर्पित करना। बहुधा, वे अपने सभा का यह गाते हुए, अंत करते थे – 'किरिगुनागा खुशियांग्यूछा क्रीस्तो शामुन्मी!' (खुश रहो विशवासियों – मसीह आ रहा है।)

जल्दी ही कई नौजवान मूलनिवासियों ने रविवार सुबह के सभा का कार्य संभालने लगे। यह साफ था कि परमेश्वर का वचन परमेश्वर का प्रवचन है चाहे वह किसी से भी प्रचारित हुआ हो!

नष्ट हो रहे आत्माओं के विषय सर्वदा सचेत जिम, कुछ सालों पहले, अक्वा नामक जाति के लोगों के बीच में मसीही कार्य करने की आशा करता था। इस जन जाति ने, यीशु के बारे में कभी नही सुना था। गोरे लोगों से उनका संपर्क तभी होता जब वे उनको मारते। दूसरे मूलजाति के लोग उनसे अत्यंत डरते थे। तब सन 1955 सितंबर में एक दिन समाचार मिला कि उनके एक मिशनरी दोस्त (एड) और एक मिशनरी विमान-चालक (नेट), उन दोनों ने अराजूनो से कुछ ही दूरी उडान भरते उन्होंने अक्वा के निवासों के घरों को देखा था। मसीह का सुसमाचार इन हिंसक जाति के लोगों तक पहुँचाने के लिए जिम अत्यंत बेचैन था।

विमान से दूसरी बार, मित्रता से, उन लोगों के साथ संपर्क करने के बाद जिम ने अपनी डायरी में लिखा था, 'परमेश्वर, जल्दी मुझे उन अक्वा लोगों के पास भेजो।' परमेश्वर ने इस इच्छा की पूरती की, जब जिम ने सन 1956, जनवरी के प्रारंभ में एक अक्वा आदमी से

हाथ मिलाया था। मगर दो दिन बाद, जिम और उसके चार साथियों की हत्या कर दी गई। हाँलाकि एलीसाबेत ने इन्ही जाति के बीच, बाद में सेवा की थी, मगर जिम के लिए, पहले, जो प्रार्थना उन्होंने लिखी थी पूरी हुई: 'परमेश्वर मैं आपसे विनती करता हूँ, मेरे जीवन की इन फूहड़ लकडियों को जला, ताकि मैं आपके लिए जल जाऊँ। मेरे परमेश्वर, मेरे जीवन का उपयोग करो क्योंकी वह तेरा ही है। लम्बी आयु की मुझे इच्छा नहीं, बल्कि प्रभु आपके जैसे भरपूर हो जीवन, यीशु मसीह।'

(एलीसाबेत इलियट द्वारा लिखित - शेडो ऑफ दी आलमाइटी देखे!)

बदला हुआ क्रूस

जब यीशु इस दुनिया में थे, उन्होंने कहाः "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है तो वह स्वयं अपना इंकार करे, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए और मेरा अनुसरण करे।" (लूका 9:23) क्रूस उठाने वाले एक व्यक्ति की कहानी के बारे में एक खूबसूरत कविता है।

विश्वास और प्रेम परखने की जब परीक्षायें आयी – कलह और संघर्ष, उसे सामना जो करना पड़ा – जीवन में, जो लाना पड़ा, अनुशासन – महसूस करने लगा वह, थकान।

सहन करने की अपनी क्षमता पर, जब हुआ संन्देह – तो कल्पना करने लगी कि दूसरों के बोझ, शायद होंगे हल्के।

जब सोई ही थी, वह प्रकट हुआ जिसने कहा, 'मैं ही मार्ग हूँ। अनुसरण करो मेरा।' दिखाया उसने, क्रूस तरह-तरह के; अलग-अलग और आकृति थे उनके। ध्यान आकर्षित किया था उसका, वह नन्हा सा; सुन्दर, जवहरातों से सजा, सोने का सलीब।

'आह! यह,' उसने सोचा, आराम से पहन पाऊँगी यही; और सहन करना उसे, जरूर आसान ही होगा। मगर वह रत्नजड़ित आभूषण था भारी। आजमाया दूसरा क्रूस जो सुन्दर फूलों से सजा, पर नीचे कांटों से था वह भरा। एक भी सलीब उसके अनुकूल मेल नहीं खाया। भारी थे सब बोझ, रोती हुई, एक एक करके नीचे रखती जाती। जबकि उसके मार्ग दर्शक ने कोमलता से कहा, 'क्रूस नहीं, तो, मुकुट नहीं!'

उनकी तरफ ताकती रही जिसने अब तक की उसकी अगुवाई,

'डरो नहीं" कहा उसने 'मगर मुझ पर करो विश्वास'
सिद्ध प्रेम का मेरा, अब तुझको हो आभास।
साधारण सा था वह सलीब; जिस में थे, प्रेम के शब्द अंकित;
देखा उसने वह क्रूस को जो स्वर्गीय आभा से दीप्त।
उठाने अपना बोझ जब वह झुकी; पहचाना, वही है क्रूस अपना पुराना।
निर्णय किया तब से उसने; मेरे लिए निश्चित, करेंगे वहीं,
जो मुझे जानते सही-सही; वही इच्छा होगी मेरी अपनी।

जब यीशु इस दुनिया में थे, उन्होंने कहाः 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है तो वह स्वयं अपना इंकार करे, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए और मेरा अनुसरण करे। (लूका 9:23)

पाप का धब्बा

'मुझे तुम्हारी परवाह कभी न थी!' जिम ने निर्दयता से आगे कहा, 'मैं अब तक तुम्हारा फायदा उठा रहा था।' अपने सहचर की बातें सुनते ही, मार्विन किंग आग बबुला हो उठा। वह सारा संयम खो बैठा। रसोइघर के एक चाकू से वार करके, बेरहमी से छुरी भोंकर जिम को मार डाला। मगर गहरी व्यथा से भरकर मर्विन ने अपने घिनौना जुर्म के बारे रिपोर्ट करके पुलिस को बुलाया, जब की जिम का शव उसके घुटनों तले पड़ा हुआ था। दूसरे दर्जे की हत्या का दोषी ठहराकर उसे साढे सात साल से प्रन्द्रह साल कैद की सजा सुनायी गयी।

मार्विन किंग उत्तर कारोलैना में, एक ऐसी माँ की कोख से जन्मा, जो उसकी

पर्वरिश करने के लिए बहुत ही गरीब थी और पिता का साया न था। संगीत और साहित्य में एक कुशल नौजवान बनने से, ऐसी यह शुरुआत, मार्विन को रोक नहीं पाया। मॉंनट्रीट एन्डरसन कॉलेज से स्नातक होने के बाद, वह डेट्रायट चला गया – मगर आगे चलकर उसके सामने संकट ही था।

सर पर संकट तब आया जब मर्विन, जिम से दोस्ती करने लगा, जो रजनरल मोटर्स के वकील का बेटा था। वह नशीले पदार्थ हेरोइन का आदी था। जब जिम उसके साथ रहने लगा, वह मार्विन की भावुकता का फायदा उठाने लगा। वह बार बार मार्विन से पैसे लेता जो शायद ही कभी वापस करता। सन 1976, वसंत काल में, मार्विन ने उससे एक मोटी रकम $ 2000 उधार दी। हॉलैण्ड में अपनी मंगेतर से मिलने जाने की वजह बताकर जिम ने यह पैसा ऋण लिया था। यह साफ एक झूठ था, क्योंकि मर्विन कुछ हफ्तों बाद जब किसी रास्ते में उसे देखा, वह जान गया कि उसने धोखा खाया है। एक विषम संघर्ष घटा था – बाद में जिम की भयानक हत्या।

जब विश्व विख्यात मसीही प्रचारक बिल्ली ग्राहम जी डेट्रॉयट में आये, उनकी पत्नी रूथ, जो पहले मर्विन की सन्डे स्कूल टीचर रह चुकी थी, जेल में उस से मिलने आयी। भेंट–कक्ष में, प्यार से उसको गले लगायी। 'तुम गलत हो।' उसने उससे कहा, 'मगर तुम्हारे पास एक और मौका है, प्रभु तुम को माफ कर सकते है। तुम्हारा जीवन एक गवाही बन सकते हो।'

मार्विन ने रूथ से कहा, 'मै अनाज़ाकारी जीवन जी रहा था। मगर मैने सचमुच पश्चाताप किया है। हॉलाकि मैं इस भयानक कार्य का सुधार ना कर पऊँ, मगर मैं कृतज्ञ हूँ कि मैं इस समाज को अपना ऋण चुका सकता हूँ। परमेश्वर की माफी तो मैं अंगीकार कर सकता हूँ मगर मुझे अपने आप को माफ करना बहुत ही कठिन है।'

'ऐसा कुछ भी नहीं जो परमेश्वर माफ नहीं कर पायेंगे सिवाय मसीह का तिरस्कार,' रूथ ने उत्तर दिया। 'चाहे पाप कितना भी काला क्यों ना हो, चाहे पाप कितना भी घिनौना क्यों ना हो, मगर, अगर हम पाप से सच्चा पश्चाताप करें और विश्वास से उनसे माफी माँगेंगे, तो वह माफ करेंगे। वह कबूल करेंगे और माफ करेंगे। मार्विन, मैं तुमको एक कहानी सुनाऊँ:

स्कॉटलाण्ड के कुछ पहाड़ी निवासी जो मछुआरे थे चाय पीने एक काफ़ी-घर में आये। परोसनेवाली चाय दे ही रही थी, कि उनमें से एक व्यक्ति, मछुआरों की सहज शैली में उस दिन के अपनी पकड़ का वर्णन कर रहा था। उसका दाया हाथ चाय के प्याले को जा लगा। सारी चाय उस सफेद दिवार पर छितरा गई। और एक बदसूरत भूरे रंग का धब्बा दिखाई पड़ने लगा। 'मुझे बहुत खेद है।', वह मछुआरा बहुत बार माफी माँगने लगा।

"कोई बात नही', नजदीकी मेंज पर बैठे एक सज्जन ने उठ कर कहा। अपनी जेब से एक रंग की कलम निकालकर, उस धब्बे के चारों तरफ चित्रांकन करने लगा, और एक शानदार राजसी मृग (हिरण) अपना श्रृंग पसारे, उभर कर सामने आया। वह चित्रकार, सर एड्वार्ड हेन्री लैण्डसीर थे, जो इग्लैण्ड के प्रमुख जन्तुओं के चित्रकार थे।

अगर एक चित्रकार, एक भूरे रंग के धब्बे को ऐसा बना सकता है, सिर्फ यही कि अगर मैं अपने सारे दाग और गलितियों को, परमेश्वर को सौंप दूँ, तो परमेश्वर क्या-क्या नहीं बना पायेंगे?'

परमेश्वर ने रूथ के शब्दों और प्यार , ध्यानदेने वाले उदाहरण ने, मार्विन को निराशा के गड्ढे, दोषी ठहराते मन और अत्माहत्या करने के विचारों से बाहर निकाला, जिस में वह डूबा हुआ था। पाँच साल बाद उसको सजा खत्म होने से पहले ही सप्रतिबन्ध जैल से रिहा किया गया।

- वान्स क्रिस्टी लिखित 'टाइमलेस स्टोरीस' (क्रिस्टियन फोकस पब्लीकेशन्स) देखें।